School of Humanities

U.P.Rajarshi TandonOpenUniversity, Prayagraj

<u>Certificate</u>

I here by declare tha the short synopsis "सांस्कृतिक धरोहर का संचार : समकालीन लोकप्रिय संस्कृति में कुम्भ मेले का विश्लेषणात्मक अध्ययन" being submitted in partial fulfillment of the requirement for the degree of Doctorof Philosophy in **Journalism and Mass Communication** under the **School of Humanities,** U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj during the academic year **2024-** It is a bona fide record of original work carried out under the supervision of **Dr. Sadhana Srivastava** and has not been submitted in full or part to any other university or institute for a degree or diploma. Further, it is certified that the short synopsis is plagiarism-free and the report has been submitted.

16-05-2025

(Mohit Kumar Jaiswal)
(Enrol. No.:**2200402**)

Research Supervisor & Co-Supervisor (If any)

(Dr. Sadhana Srivastava)
Facultyof Journalism and Mass Communication

साधना श्रीवास्तव
सहायक आचार्य
पत्रकारिता एवं जनसंचार, मानविकी विद्याशाखा
उ०प्र०रा०ट०मु०वि०वि०, प्रयागराज

16/05/2025
(Prof. Satyapal Tiwari)
(Director, Schoolof Humanities)

16/05/25
(Prof. P. K. Pandey)
(Director,R&D Cell)

सांस्कृतिक धरोहर का संचार : समकालीन लोकप्रिय संस्कृति में कुम्भ मेले का विश्लेषणात्मक अध्ययन

SHORT SYNOPSIS

Submitted in partial fulfillment of the requirement of the degree of

DOCTOR OF PHILOSOPHY

in

Journalism and Mass Communication

to

U.P.Rajarshi TandonOpenUniversity, Prayagraj

by

Mohit Kumar Jaiswal

Enroll. No. 2200402

Under the Supervision of

सहायक आचार्य

उ०प्र०रा०ट०मु०वि०वि०, प्रयागराज

Dr. Sadhana Srivastava

Faculty of Journalism and Mass Communication

Schoolof Humanities

U.P. Rajarshi Tandon Open University

Shantipuram (Sector–F), Phaphamau, Prayagraj– 211013

Abstract (सारांश):

समकालीन लोकप्रिय संस्कृति में, कई वास्तविकताओं के समय में और बहु–सांस्कृतिक पर्यटकों के लिए पर्यटकों और समाज के साथ सांस्कृतिक धरोहर का प्रभावी ढंग से संवाद के माध्यमों पर विचार की आवश्यकता है। सांस्कृतिक धरोहर को रचनात्मक और संबंधपरक प्रक्रिया के रूप में मानना महत्वपर्ण है जहां रचनात्मक प्रदर्शन के माध्यम से स्थानों और समुदायों का लगातार पुर्नजीवंत किया जाता है। यह शोध सांस्कृतिक धरोहर के साथ प्रभावी संचार प्राप्त करने के दृष्टिकोण के रूप में आभासी प्रौद्योगिकियों का परिचय भी देता है। यह दृष्टिकोण आभासी धरोहर की व्यवस्था को लोकप्रिय बनाने पर जोर देता है, जबकि प्रौद्योगिकी उक्त व्यवस्था के अनुरूप संभव है। यह संबोधित करता है कि कैसे सांस्कृतिक धरोहर के संचार में समकालीन सांस्कृतिक धरोहर के तत्वों, उपयोगकर्ताओं और संदर्भ के बीच सार्थक संबंधों का प्रतिनिधित्व किया जा सकेगा। यह शोध कार्य कुम्भ मेले का सांस्कृतिक धरोहर के साथ प्रभावी संचार प्राप्त करने की दिशा में अग्रसर एक शोध है जो विश्लेषात्मक शोध पद्धति पर निर्भरता के अनुरूप संक्षेपित करेगा।

उक्त शोध कार्य में गुणात्मक अनुसंधान प्राथमिक डेटा (120 उत्तरदाताओं के अनुसूची साक्षात्कार, सभी सचेत रूप से संबंधित गतिविधियों में लगे हुए हैं या उससे संपर्क में हैं एवं प्रयागराज से प्रकाशित किन्ही दो हिन्दी समाचार पत्रों) दोनों पर आधारित है। प्रयागराज में धरोहर के संचार और जागरूकता के लिए प्रयागराज में सरकार द्वारा संरक्षित मूर्त धरोहर के बारे में संचार बहुत प्रभावी रहा है, जबकि असुरक्षित और अमूर्त धरोहर से संबंधित संचार समुदायों के चौनलों के भीतर बहुत मजबूत था। मौजूदा रिकॉर्ड अमूर्त धरोहर के बारे में बात करने के लिए स्मृति और पुरानी यादों का उपयोग करते हैं, स्थानीय निवासी मेलों, परिवार और पड़ोस के मौखिक नेटवर्क, सांस्कृतिक त्योहारों और विभिन्न कहानी और कथा परंपराओं के माध्यम से इस धरोहर को आपस में संप्रेषित कर रहे हैं। अमूर्त धरोहर को संप्रेषित करने के माध्यम में शहर की विशिष्ट पहचान में योगदान देने वाले अनुष्ठान और सांस्कृतिक वैचारिकता का अतिमहत्वपूर्ण योगदान है। इसके अलावा, कई सामुदायिक पहल कुंभ जैसी सांस्कृतिक धरोहर को प्रभावी ढंग से संप्रेषित कर रही हैं। वे बहु–माध्यम दृष्टिकोण का उपयोग करके धरोहर के पहलुओं पर सचेत रूप से जागरूकता प्रसारित करने में सफल रहे हैं। इन पहलों ने सरकारी स्रोतों द्वारा छोड़े गए संचार अंतराल को भरकर संरक्षित धरोहर स्थलों के संबंध में लोगों की जानकारी और ज्ञान की जरूरतों को भी पूरा किया। विश्लेषणात्मक शोध से ज्ञात होता है कि संरक्षित स्थल का संचार किस प्रकार कियाशील है।

मुख्य शब्दः— कुम्भ मेला, अर्द्धकुम्भ मेला, महाकुंभ मेला, माघ मेला, जन संचार, समकालीन, लोकप्रिय, संस्कृति, पर्यटन, प्रशासनिक।

Sadhna

CONTENTS

Sr.No.	Description	Page No.
1 -	Introduction	5-5
2 -	Literature Review	6-11
3 -	Description of the Broad Area	11-12
4 -	Objectives of the Study	12-12
5 -	Research Methodology	12-14
6 -	Expected Outcome of the Research	14-14

References

PlagiarismReport

1- प्रस्तावना (Introduction):

सांस्कृतिक धरोहर में भौतिक या कलाकृतियों जैसे मूर्त सांस्कृतिक धरोहर शामिल हैं। ये आम तौर पर चल और अचल धरोहर के दो समूहों में विभाजित होते हैं। अचल धरोहर में इमारतें, ऐतिहासिक स्थान और स्मारक शामिल हैं। चल धरोहर में ग्रंथ, दस्तावेज, चल कलाकृतियाँ, संगीत और ऐसी अन्य वस्तुएँ शामिल हैं जिन्हें भविष्य के लिये संरक्षण योग्य माना जाता है।

"सांस्कृतिक धरोहर मानव केंद्रित है और जिसे सृजन, कल्पना, बुद्धिमता, कौशलों लोगों की कलात्मक योग्यताओं के माध्यम से लंबी कालावधि में विकसित किया जाता है। यह धार्मिक और सामाजिक दोनों के व्यवहारों का संचित परिणाम है। इसको रीति–रिवाजों, नृत्य, संगीत, आदतों, जीवित जीवन शैलियों, भौतिक और व्यावहारिक स्वरूपों में देखा जा सकता है। यह प्राचीन से मध्य और मध्य से वर्तमान समय तक के संक्रमण काल से गुजर चुकी हैं"।

कुम्भ मेला भारत का सबसे बड़ा धार्मिक/सांस्कृतिक आयोजन है जहां लाखों श्रद्धालु अपनी आस्था की अन्त्योष्टि के लिये विभिन्न परिस्थितियों से जूझते तीर्थ स्थल संगम क्षेत्र पहुंचते हैं। उनका मानना होता है कि पवित्र संगम में निर्धारित तिथि को डुबकी लगाने से उनके पाप धुल जायेंगे। धार्मिक आस्थावान मनुष्य स्नान के साथ–साथ कई अन्य धार्मिक कृत्य बड़े उत्साह के साथ गंगा, यमुना, विलुप्त सरस्वती नदी के तट (संगम) पर करते हैं। प्रत्येक 12 वर्ष में लगने वाले इस कुम्भ मेले की दिव्यता एवं भव्यता निखारने को जिला प्रशासन, स्वास्थ्य विभाग, रेलवे विभाग, जल–कल विभाग, विघुत विभाग, दूर संचार विभाग, एवं अन्य विभाग अपने अथक प्रयासो के उपरान्त आयोजित कर पाते हैं। यह एक ऐसा आयोजन भी है जहां किसी व्यक्ति का उपस्थित होना निमंत्रण आदि पर निर्भर नही करता यहां हर वर्ग हर आयु का मनुष्य आस्था की डुबकी लगाने संगम नगरी पहुंच जाता है। हर वर्ष माघ मेले का भी आयोजन प्रयागराज मेला प्राधिकरण, प्रयागराज द्वारा किया जाता है जो कुछ एक समय सीमा के पूर्व सम्पूर्ण व्यावस्था के अनुरूप कार्य कर आयोजन सुनिश्चित किया जाता है यह एक अथक परीश्रमी कार्य है। प्रयागराज मेला प्राधिकरण, प्रयागराज कुम्भ मेले जैसी भीड़ का आदर–सत्कार एवं सुरक्षा, स्वछता के लिये पर्याप्त व्यवस्था अपने अधीनस्थ विभागो के सहयोग से करता है।

Sadhna

2- साहित्य समीक्षा (Litrature Review):

Paul, S. (2019). Event Management: A Study on the Ardh Kumbh Mela 2019. International Journal of Business and Management Invention (IJBMI), 8(4) 42-47. ISSN (Online): 2319 – 8028, ISSN (Print): 2319 – 801X

"इस अध्ययन में महाकुंभ, पुराना कुम्भ, अर्ध–कुम्भ, कुम्भ मेला, वार्षिक माघ मेला आदि का व्याख्यात्मक विवरण के अधार पर मेले के आर्थिक, समाजिक, अध्यात्मिक बिन्दुओ पर मेले के विकास कार्यो पर शोध मुख्यतः आधारित है। उक्त शोध पत्र साहित्य के सर्वेक्षण पर आधारित कुम्भ मेले के छह महत्व क्रमशः पौराणिक महत्व, ज्योतिषीय महत्व, आध्यात्मिक महत्व, सामाजिक महत्व, आर्थिक महत्व और राष्ट्रीय महत्व के विषय का वर्णन करता है। इसी के साथ कुम्भ मेला 2019 में प्रदान की गई सुविधाएं, कुम्भ मेले के भविष्य के आयोजनों के लिए मानदंड, हरिद्वार में होने वाले कुम्भ मेले के लिए विचार, पर्यटन उद्योग के विकास और क्षमता के दृष्टिकोण पर विस्तृत अध्ययन किया गया है। इसी के साथ कुंभ मेला 2019 की व्यवस्था एवं प्रयागराज के विकास पर बल दिया गया है। इन्होने अपने निष्कर्ष में कुम्भ मेले जैसे आयोजन को पर्यटन संभावनाओ में विकास की स्थिति पर अपना अभिमत अभिलिखित किया"।

Buzinde, N. & Kalavar, M. & Kohli, N. & Quadri, A. & Padala, R. (2014). Emic understandings of Kumbh Mela pilgrimage experiences. Annals of Tourism Research, 49(3), 1-18. ISSN- 0160-7383

यह अध्ययन भारत के इलाहाबाद वर्तमान प्रयागराज में 2013 के कुम्भ मेले में तीर्थयात्रियों की प्रेरणाओं, गतिविधियों और अनुभवों की जांच करता है। यह तीर्थयात्रियों की बहुमुखी प्रकृति जिसमें आध्यात्मिक संपर्क (भक्ति) और आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्ति (संतों से) की आवश्यकता पर विचार किया गया है। इसी के साथ अनुभवात्मक घटक के विवरण में आध्यात्मिकता और सामाजिक एकता के अनुभवो पर विचार व्यक्त किया गया है। अध्ययन तीर्थ पर्यटन और प्रतिभागियों की एकजुटता की भावना के बीच संबंध को प्रदर्शित करता है।

Kanaujiya, A. & Tiwari, V. (2024). Health implications of mass gatherings: Kumbh Mela in India 2025. Journal of Travel Medicine (JOTM), 31(6), Online ISSN 1708-8305 https://academic.oup.com/jtm/article/31/6/taae076/7685666

यह अध्ययन आगामी वर्ष 2025 में आयोजित होने वाले कुम्भ मेले के स्वास्थ्य मामलो पर आधारित है जहां लेखक ने पूर्व में अयोजित 2013 के कुम्भ मेले में तीर्थयात्रियों की प्रेरणाओं, गतिविधियों और अनुभवों की जांच किया गया। यह तीर्थयात्रियों की अनुभवात्मक घटक के विवरण में आध्यात्मिकता और सामाजिक एकता के अनुभवो पर विचार व्यक्त किया गया है। अध्ययन तीर्थ पर्यटन और प्रतिभागियों की एकजुटता की भावना के बीच संबंध को प्रदर्शित करता है। कोरोना वायरस या COVID–19 जैसी संक्रामक बीमारियों के फैलने के कारण बड़े पैमाने पर समारोहों का आयोजन कैसे किया जाए, एवं लाखों लोगों की रसद आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए सतर्क योजना और त्वरित कार्रवाई जिसमें पानी, स्वच्छता, सुरक्षा, स्वास्थ्य और परिवहन जैसे विभिन्न पहलू शामिल हैं, इसी के साथ इवेंट मैनेजमेंट, नए स्वास्थ्य प्रबंधन कार्यक्रम, आपदा प्रबंधन और भीड़ नियंत्रण पर अध्ययन किया गया है।

Shukla, S. (2021). Conducting mass gathering events during the COVID-19 pandemic: a case study of Kumbh Mela 2021 as a potential 'super spreader event'. Journal of Travel

Sad Love

Medicine, 28(8) 1–7, Online ISSN 1708-8305
https://doi.org/10.1093/jtm/taab160

इस शोध कार्य में शोधकर्ता अपने अभिमत में वर्णित किया कि कोविड–19 को कुम्भ मेला 2019 में क्या प्रभाव पड़ा इसी के साथ रिस्क मैनेजमेंट, मेले में स्वास्थ्य सेवाऐं, भीड़ नियंत्रण आदि का स्वास्थ्य पर प्रभाव एवं इसकी पृष्ठभूमि, एवं प्रभावों के परिणामों का अध्ययन किया गया है"।

Taylor, S. (2018). Impermanence Materialized: Exploration of Temporary Architecture at the Kumbh Mela in Allahabad, India. An Architecture Theses. Roger Williams University. School of Architecture, Art, and Historic.

https://core.ac.uk/download/pdf/212908708.pdf

इस डाक्टोरियल थीसिस में इलाहाबाद के कुम्भ मेले में अस्थायी तंबू (अस्थायी टेंट) के निर्माण एवं संयोजन के सम्बंन्ध में विस्तृत अध्ययन किया गया है। कुम्भ मेले के दौरान वातावरण के अनुकूल अस्थायी निर्माण के सन्दर्भ में कुम्भ मेले की सफलता पर शोध केन्द्रित है। निष्कर्ष में कुम्भ मेले जैसे आयोजन को पर्यटन संभावनाओ के विकास की स्थिति पर स्थलीय निवास सुविधा पर अपना अभिमत अभिलिखित किया।

Kama, M. (2003). Making the Colonial State Work for You: The Modern Beginnings of the Ancient Kumbh Mela in Allahabad. The Journal of Asian Studies Duke University Press, 62(3), pp 873-905. ISSN- 00219118

इस जर्नल आर्टिकल में कुम्भ मेले को आधुनिक भारत को सबसे बड़ा शो कहा गया है। इन्होने दर्शाया कि हिन्दू प्राचीन धर्म किस प्रकार अपने कल्चर के प्रति कियाशील है, जहां अस्थायी निर्माण, वेशभूषा, नांगा स्नान, पारम्परिक नाटक, आदि का डिजिटल युग में प्रभावशीलता और दिव्यता पर जोर दिया गया है। इसी के साथ इसे धार्मिक उत्सव जो अनंत से अनादि काल तक और वर्तमान में विद्यमान है, पर विस्तार से चर्चा की गयी है।

Quadri, A. & Padala, R. (2021) An Aspect of Kumbh Mela Massive Gathering and COVID-19. Current Tropical Medicine Reports By United States, 8(3), 225–230. ISSN-21963045

कोविड–19 महामारी के दौरान एक अप्रत्यासित स्वास्थ्य संकट पर यह शोध पत्र केन्द्रित है, जिसका प्रभाव हमने–आपने सभी क्षेत्रों में दिखाई देखा। लेखक के अनुसार भारत में कोविड–19 के दूसरे सबसे अधिक मामले दर्ज किए गए हैं, जहां यह शोधपत्र का उद्देश्य कुम्भ मेले में होने वाली सामूहिक भीड़ की धार्मिक और सामाजिक पृष्ठभूमि के साथ–साथ उन अनुष्ठानिक प्रथाओं पर भी विचार करना है, जो कोविड की स्थिति में संभावित रूप से सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए जोखिम पैदा कर सकती हैं। इस शोध पत्र का उद्देश्य ऐसे जोखिमों से बचने के लिए संभावित प्रारंभिक और प्रभावकारी उपायों की पहचान करना है।

Trivedi, A. (2020). Evaluation and Testing of Crowd Management Strategies using Agent Based Modelling and Simulation for Kumbh Mela like Large Religious Gatherings. A Doctoral Thesis, MNNIT ALLAHABAD. GEOGRAPHIC INFORMATION SYSTEM (GIS) CELL.
http://hdl.handle.net/10603/399803

Sadhu

इस डाक्टोरियल थीसिस में बड़े धार्मिक आयोजनों की तरह कुम्भ मेले के लिए एजेंट आधारित मॉडलिंग और सिमुलेशन का उपयोग करके भीड़ प्रबंधन रणनीतियों का मूल्यांकन और परीक्षण वर्णानात्मक ढंग से किया गया है। उक्त थीसिस कुम्भ मेले के दौरान भीड़ नियंत्रण एवं इससे सम्बन्धित विभिन्न चरों को ध्यान में रखते हुये निष्कर्ष इंगित किये गये हैं"।

Kanaujiya, A. & Tiwari, V. (2024) Health implications of mass gatherings: Kumbh Mela in India 2025. Journal of Travel Medicine. 31(6). Online ISSN 1708-8305
https://academic.oup.com/jtm/article/31/6/taae076/7685666

उक्त शोध पत्र साहित्य के सर्वेक्षण पर आधारित कुम्भ मेले के छह महत्व क्रमशः पौराणिक महत्व, ज्योतिषीय महत्व, आध्यात्मिक महत्व, सामाजिक महत्व, आर्थिक महत्व और राष्ट्रीय महत्व के विषय का वर्णन करता है। इसी के साथ कुम्भ मेला 2019 में प्रदान की गई सुविधाएं, कुम्भ मेले के भविष्य के आयोजनों के लिए मानदंड, हरिद्वार में होने वाले कुम्भ मेले के लिए विचार, पर्यटन उद्योग के विकास और क्षमता के दृष्टिकोण पर विस्तृत अध्ययन किया गया है। जहां इस प्रकार के समागमों को एक व्यापक एवं निहितार्थ आयोजन बताया गया है।

Nirmalendu, K. (2019). Prayagraj Aur Kumbh, Sanskratik Vaibhav ki Abhinav Gatha. Lok Bharti Prakashan

उपरोक्त पुस्तक "प्रयागराज और कुंभ, संस्कृतिक वैभव की अभिनव गाथा" जो भारतवर्ष, आर्यवर्त और मध्य प्रदेश में आर्य संस्कृति के दो मुख्य केन्द्रः अयोध्या और प्रयागराज को ध्यान में रखकर प्रयागराज का परिचय, महार्षि भरद्वाज आश्रम एवं राम चरित मानस में प्रयाग की महिमा एवं अक्षयवट के बारे में गहन अध्ययन पर लेख आधारित है।

Singh, P. (2018). THE ROLE OF KUMBH MELA IN CULTURAL DEVELOPMENT OF ALLAHABAD: A STUDY IN CULTURAL GEOGRAPHY. A Doctoral Thesis, UNVERSITY OF ALLAHABAD, PRAYAGRAJ. DIPARTMENT OF GEOGRAPHY.
http://hdl.handle.net/10603/186329

इस डाक्टोरियल थीसिस में इलाहाबाद के सांस्कृतिक विकास में कुम्भ मेले की भूमिका का सांस्कृतिक भूगोल के सन्दर्भ में अध्ययन किया गया है और निष्कर्ष में मांग का आकलन वैज्ञानिक आधार पर, यथार्थवादी तरीके से करने, योजना एवं सुझाव आमंत्रित किये जाने, वित्तीय निगरानी हेतु समुचित व्यवस्था, पिछले मेले के अनुभवों का उपयोग करते हुए मेले के लिए सुविधाएं और सेवाएं हेतु योजना, कार्यक्रम मूल्यांकन और समीक्षा तकनीक का विस्तार, आदि विषयो पर ध्यान केन्द्रित कर सम्पूर्ण लेख अभिलिखित है"।

Barma, M. (2023). CULTURAL HERITAGE AND EUROPEAN IDENTITY. A Doctoral Thesis, JawaharLal Nehru University, Delhi
http://hdl.handle.net/10603/580128

एक व्यापक संस्कृति और विरासत के हिस्से के रूप में धार्मिक दृष्टिकोणों को सक्षम बनाना और नीति निर्माण के लिए उनके पूरक के रूप में यूरोपीय संघ के कानूनी ढांचे के भीतर विशिष्ट दृष्टिकोणों को समायोजित करने एवं यूरोप के नागरिक समाज को समृद्ध करने के लिए धार्मिक और संस्कृति आधारित संगठनों का उपयोग करने की संभावना और अवसर एवं यूरोपीय स्तर पर कई पहल सांस्कृतिक विरासत के सामान्य मूल्यांकन में योगदान, यूरोपीय सांस्कृतिक विरासत, यूरोपीय विरासत, यूरोपीय विरासत पुरस्कार और यूरोपीय संघ फिल्म महोत्सव में धार्मिक विस्तार के सम्बन्ध में कार्य किया गया है।

Midhunasree, A. (2018). A Study on Marketing of Cultural Heritage tourism in Kerala.

A Doctoral Thesis, Mahatma Gandhi University, Kottayam kerla.
https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/273504

केरल के सांस्कृतिक विरासत पर्यटन के विकास और संरक्षण के लिए, उपलब्ध विरासत संसाधनों और इस क्षेत्र में आने वाले पर्यटकों के लिए प्रभावी ढंग से विपणन के लिए उपयुक्त तकनीकों को तैयार करने, सांस्कृतिक विरासत पर्यटन का प्रभावी विकास सांस्कृतिक विरासत पर्यटकों की संतुष्टि, आदि विषय पर कार्य किया गया है। इसी के साथ सांस्कृतिक विरासत, पर्यटन उत्पाद, विपणन की प्रभावशीलता जो ग्राहक संतुष्टि पर निर्भर करती है, शायद इसलिए यह अध्ययन सांस्कृतिक विरासत पर्यटन विपणन के संबंध में पर्यटकों की संतुष्टि के विकास पर निर्भर है। स्थानीय समुदाय को सामाजिक–आर्थिक और सांस्कृतिक लाभ प्राप्त हो जिसमें पर्यटन उत्पादों और सेवाओं की गुणवत्ता बनाए रखने पर कार्य किया गया है।

RAFAT, B. (2010). A STUDY ON MODERN INTERPRETIVE TECHNIQUES, THEIR ROLE AND POTENTIAL IN INDIAN MUSEUMS AND HERITAGE SITES. A Doctoral Thesis. AMU.
http://hdl.handle.net/10603/63076

इस शोध पत्र के अनुसार विरासत व्याख्या एक ऐसी विधि है जिसका उद्देश्य आगंतुकों के लिए किसी क्षेत्र या क्षेत्र, प्राकृतिक या सांस्कृतिक विरासत की विशेष विशेषताओं को प्रकट करना है। स्व–निर्देशित ट्रेल्स, निर्देशित पर्यटन, संग्रहालय प्रदर्शनी, ब्रोशर और एक्शन डे जैसी पर्यटन सुविधाओं पर ध्यान केंद्रित कर बैलेंटाइन, आर. (2003) के सुझाव जो आगंतुकों को उचित स्तर की जानकारी प्रदान करे जिससे रुचि, समझ, सीखने और भावनात्मक जुड़ाव संभव हो पर यह शोध आधारित है।

Rajdeep, R. (2023). Participatory governance in cultural heritage deciphering the quality of participatory decision making at walled city of Ahmedabad India. A Doctoral Thesis, Pandit Deendayal Petroleum University
http://hdl.handle.net/10603/520747

अध्ययन इस प्रमुख आधार के साथ शुरू होता है कि प्रभावी विरासत संरक्षण और प्रबंधन के लिए निर्णय लेने में स्थानीय समुदाय की भागीदारी का अध्ययन, भारत के पहले यूनेस्को विश्व विरासत शहर, पुराने अहमदाबाद में सांस्कृतिक और शहरी विरासत के शासन में भागीदारी की वर्तमान गुणवत्ता और सामाजिक–स्थानिक व्यवस्था की जांच, पुराने अहमदाबाद में सांस्कृतिक शासन की मौजूदा प्रणाली, सांस्कृतिक संस्थानों में भागीदारी के लिए उपलब्ध स्थानों और भागीदारी के वर्तमान स्तरों का अध्ययन किया गया है।

Chatterjee, I. (2017) Study of biodiversity status of some important heritage sites in West Bengal A museological study. A Doctoral Thesis. UNIVERSITY OF CALCUTTA. Department of Biochemistry.
http://hdl.handle.net/10603/185963

अध्ययन इस प्रमुख आधार के साथ शुरू होता है कि प्रभावी विरासत संरक्षण और प्रबंधन के लिए निर्णय लेने में स्थानीय समुदाय की भागीदारी का अध्ययन, भारत के पहले यूनेस्को विश्व विरासत शहर, पुराने अहमदाबाद में सांस्कृतिक और शहरी विरासत के शासन में भागीदारी की वर्तमान गुणवत्ता और सामाजिक–स्थानिक व्यवस्था की जांच, पुराने अहमदाबाद में सांस्कृतिक शासन की मौजूदा प्रणाली, सांस्कृतिक संस्थानों में भागीदारी के लिए उपलब्ध स्थानों और भागीदारी के वर्तमान स्तरों का अध्ययन किया गया है। शोधकर्ता के अनुसार विरासत स्थलों को संरक्षित किया जाना चाहिए ताकि आने वाली

Sadhan

पीढ़ियाँ इसका आनंद ले सकें और इसकी महत्ता को समझ सकें, और इसकी यथास्थिति बरकरार रहे। इसलिए वर्तमान अध्ययन अन्य विरासत स्थलों पर अध्ययन के लिए एक मॉडल के रूप में कार्य करता है।

Mishra, S. (2019). INFORMAL ECONOMIES OF RELIGIOUS FAIRS: STUDYING THE MAGH MELA OF PRAYAGRAJ (ALLAHABAD). A Doctoral Thesis, UNIVERSITY OF DELHI. DEPARTMENT OF GEOGRAPHY DELHI SCHOOL OF ECONOMICS.
https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/371685

इस डाक्टोरियल थीसिस के अन्तर्गत प्रयागराज में होने वाले कुम्भ मेले एवं माघ मेले के आयोजन, आर्थिक नीति, धार्मिक नीति, यात्रांत, पर्यटन को मेले के सन्दर्भ में वर्णित किया गया है। इसी के साथ माघ में में फुटकर दुकानदार, झूले एवं यहां होने वाले व्यापार एवं भौगोलिक परिवेश पर भी विचार किया गया है।

Malik, S. (2021). Cultural Tourism: A Study of Surajkund International Crafts Fair. Turkish Online Journal of Qualitative Inquiry (TOJQI). 12(9) 186-194. ISSN-1309-6591

लेखक के अनुसार मेले किसी संस्कृति की महत्वपूर्ण अभिव्यक्ति होते हैं। ये आयोजन आगंतुकों के बीच तेजी से लोकप्रिय हो रहे हैं। सूरजकुंड अंतर्राष्ट्रीय शिल्प मेला ऐसा ही एक आयोजन है। यह 1987 से हरियाणा (भारत) के सूरजकुंड में आयोजित किया गया, इसमें विदेशियों सहित 1 मिलियन से अधिक पर्यटक आये। इस आयोजन ने स्थानीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन्होने मेले में आने वाले पर्यटकों की विशेषताओं की जाँच की जहां इन्होने सुझाव दिया कि आयोजकों को अधिक से अधिक सांस्कृ तिक पर्यटकों, विदेशियों और भारतीयों दोनों को आकर्षित करने के लिए एक विपणन योजना विकसित करनी चाहिए। स्थानीय संस्कृति से संबंधित अधिक गतिविधियाँ और आकर्षण मेले में जोड़े जा सकते हैं ताकि विभिन्न आयु वर्ग के अधिक से अधिक पर्यटक मेले की ओर आकर्षित हो सकें। इससे मेले के आर्थिक महत्व को बढ़ाने में मदद मिलेगी।

Pandey, S. (2024). Fairs or Melas: Symbol of Economic Exchange And Socio - Religious Harmony (Ancient to Modern Period). International Journal of Creative Research Thoughts (IJCRT). 12(3), ISSN: 2320-2882

इस अध्ययन कार्य में लेखिका द्वारा वर्णित किया गया है कि मेले जैसे आयोजन में विभिन्न संस्कृतियों के लोग एक साथ आते हैं और एक–दूसरे की परंपराओं को अपनाते हैं। देश में मेले और त्यौहार हमेशा से ही यादगार पल रहे हैं। इन्होने सदियों से आयोजित किए जाने वाले कुछ प्रमुख मेलों के बारे में चर्चा किया। इनका अध्ययन उत्तर मध्य भारत के विभिन्न भागों में आयोजित किए जाने वाले विभिन्न मेलों पर प्रकाश डालता है, जो प्राचीन काल से आधुनिक काल तक की समयावधि तक इसे तीन खंडों में विभाजित किया गया है, पहले खंड में मुख्य रूप से प्रमुख मेलों के बारे में चर्चा की गई है और उनकी पृष्ठभूमि का पता लगाया गया है। दूसरे खंड में मेलों और वाणिज्यिक आदान–प्रदान या व्यापार और वाणिज्य के बीच संबंध का पता लगाने का प्रयास किया गया है और यह व्यापारियों के लिए एक मंच की तरह कैसे कार्य करता है और अंतिम खंड में समारोह सामाजिक आदान–प्रदान और धार्मिक सद्भाव का माध्यम के बारे में एवं अर्थव्यवस्था और सामाजिक धार्मिक समामेलन की दृष्टि से इन मेलों पर अपना अभिमत अभिलिखित किया"।

Mehra, S. (2021). Communicating Heritage Effectively A Study of Dehra Dun. A Doctoral Thesis, Doon University.
http://hdl.handle.net/10603/365822

Sadhna

इस डाक्टोरियल थीसिस के अन्तर्गत देहरादून क्षेत्र में मूर्त एवं अमूर्त विरासत के संचार का विश्लेषण किया गया है। यह संरक्षित पुरातात्विक स्थलों के बारे में आगंतुकों को सूचना का संचार, भव्य स्मारकों की अनुपस्थिति में विरासत का संचार, स्थानीय निवासियों के बीच देहरादून की अमूर्त विरासत का संचार, विरासत संरक्षण में नीचे से ऊपर के दृष्टिकोण के आधार पर प्रभावी संचार का पता लगाना। इसके साथ ही देहरादून में सरकार द्वारा संरक्षित मूर्त विरासत के बारे में संचार का प्रभाव एवं मौजूदा अभिलेख अमूर्त विरासत के बारे में बात करने के लिए स्मृति और पुरानी यादों का उपयोग करते हुये स्थानीय निवासी मेलों, परिवार और पड़ोस के मौखिक नेटवर्क, सांस्कृतिक उत्सवों और विभिन्न कहानी और कथात्मक परंपराओं के माध्यम से आपस में इस विरासत के संचार का समग्र अध्ययन किया गया है।"

3- विस्तृत विवरण क्षेत्र (Description Broad Area) :

भारतीय सांस्कृतिक धरोहर न केवल बहुत प्राचीन धरोहरों में एक है किन्तु बहुत व्यापक एवं विविध भी है। इसके परिणामस्वरूप अनेक संस्कृतियों का संश्लेषण होता रहा। प्रयागराज स्थित संगम क्षेत्र पर प्रत्येक 12 वर्षों के अन्तराल में होने वाला कुंभ मेला एक समृद्ध और अमूल्य सांस्कृतिक धरोहर दर्शित करता है जिससे भारत को विविधता और महान आश्चर्यों की भूमि के रूप में जाना जाता है। भारत की संस्कृति का अभिप्राय भारत के लोगों की जीवन–शैली पर निर्भर है। देश के अंदर संगीत, वास्तुकला, भोजन, नृत्य और परम्पराएँ अलग–अलग स्थानों पर अलग–अलग प्रकार की हैं। संस्कृति का मूल सूत्र है जीवन यात्रा के वास्तविक उपकरण, सामाजिक व्यवस्था और इन सबकी सहायता से बना मानस लोक। जीवन के भौतिक उपादान अक्सर बदलते रहते हैं, उन्हीं के अनुसार बदलती है सामाजिक व्यवस्था और मानस लोक। कोई भी संस्कृति अपरिवर्तनीय नहीं होती, रूपान्तर बराबर होता रहता है। ऋग्वेद कालीन संस्कृति, अशोक कालीन संस्कृति से भिन्न थी। मुस्लिम और इसाई संस्कृति का स्वरूप कुछ और था। अनादिकाल से भारत में अनेक जाति, सभ्यता, धर्म एवं संस्कृति का अबाध प्रवाह रहा। भारतीय संस्कृति ने समय और आवश्यकता के अनुरूप विभिन्न संस्कृतियों एवं सभ्यताओं से समझौता किया तथा आदान प्रदान भी। भारत में अनेक सम्राटों का उत्थान– पतन हुआ। अन्धकारमय युग आया और अनेक राजनीतिक घटनायें घटी, जिनमें अधिकांश का नाम निशान भी अब नहीं रहा, फिर भी भारतीय संस्कृति की धारा कभी सूखी नहीं और उसने समय–समय पर हुए उत्थान पतन के बावजूद अपनी अनेक विशेषताओं को सुरक्षित रखा।

समकालीन लोकप्रिय सांस्कृतिक धरोहरो में एक कुम्भ मेले के संचार भारत के सांस्कृतिक विकास को बढावा देता है उक्त के परिपेक्ष्य में प्रयागराज मेला प्राधिकरण ने अपनी अद्‌भुत पूर्वानुमान और प्रबंध कौशल से वर्ष 2019 के कुम्भ के आयोजन को इतनी कुशलता से प्रबंधित किया कि पूरा विश्व आश्चर्य–चकित रह गया। इस कुम्भ में अब तक के सर्वाधिक, कुल लगभग 24 करोड़ श्रद्धालु स्नान के लिए आए। फिर भी, कोई अफरा–तफरी नहीं, कोई परेशानी नहीं। 72 देशों के प्रतिनिधियों ने अपने नेत्रों से इस विहंगम परिदृश्य को आत्मसात किया और इस भव्य और कुशलता से प्रबंधित कुम्भ के कायल होकर अपने देशों को लौटे। पहली बार मेले में 5 हजार प्रवासी भारतीय भी आए थे जो होटलों के बजाय प्रयागवासियों के अतिथि बन कर ठहरे। इस दौरान छह विश्व रिकॉर्ड भी बने। पहली बार अक्षयवट को आम जन मानस के लिए खोला गया जो साढ़े चार सौ वर्ष से किले के अन्दर बंद करके रखा गया था। यमुना नदी के तट पर स्थित

Sadhna

इस किले पर अकबर का कब्जा होने के बाद से ही अक्षयवट को इस किले के अन्दर बंद कर दिया गया था। कुम्भ को दिव्य कुम्भ–भव्य कुम्भ के साथ ही स्वच्छ कुम्भ, सांस्कृतिक कुम्भ, सुरक्षित कुम्भ एवं डिजिटल कुम्भ आदि की संभावना से जोड़ा गया। कुम्भ मेले में यह प्रयास किया गया कि पुण्य लाभ अर्जित करने आए श्रद्धालुओं को धर्म, संस्कृति, श्रद्धा एवं भक्तिमय वातावरण प्राप्त हो के प्रयाशो को सफल माना गया जो वास्तव में एक सफल प्रयोग रहा।

यह शोध प्रयागराज के कुम्भ क्षेत्र में मूर्त और अमूर्त धरोहर के संचार का विश्लेषण करता है। यह आगंतुकों को संरक्षित पुरातात्विक स्थलों के बारे में जानकारी का संचार, भव्य स्मारकों की अनुपस्थिति में सांस्कृतिक धरोहर का संचार, स्थानीय निवासियों के बीच कुंभ की अमूर्त धरोहर का संचार, धरोहर संरक्षण में नीचे से ऊपर के दृष्टिकोण की प्रभावशीलता और धरोहर जागरूकता के लिए काम करने वाली सामुदायिक पहल की प्रभावशीलता का अध्ययन करता है।

4- अध्ययन के उद्देश्य (Objectives of the Study) :

1. कुम्भ 2025 के अयोजन में सांस्कृतिक धरोहर को संचारित करने में परम्परागत संचार का विश्लेषण करना।
2. कुम्भ 2025 के अयोजन में सांस्कृतिक धरोहर को संचारित करने में हिन्दी समाचार पत्रो में प्रकाशित खबरों का अध्ययन करना।
3. समकालीन लोकप्रिय संस्कृति के परिपेक्ष्य में कुम्भ 2025 का अध्यययन करना।
4. कुम्भ मेले के भीड़ प्रबंधन संचार रणनीति का अध्ययन करना।
5. कुंभ मेले के आयोजन से सम्बन्धित विज्ञापनों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।
6. कुम्भ मेले के प्रबंधन मे प्रयागराज मेला प्राधिकारण, प्रयागराज एवं उनके सम्बन्धित विभाग के संचार रणनीति का अध्ययन।

5- अनुसंधान अभिकल्प (Research Mathodology) :

इस अध्ययन के अन्तर्गत शहर प्रयागराज में आयोजित कुम्भ मेले से सम्बन्धित खबरों का अंतर्वस्तु विश्लेषात्मक एवं वर्णात्मक अध्ययन तकनीक का प्रयोग किया गया है। इस शोध कार्य के अन्तर्गत हिंदी समाचार पत्रों के प्रयागराज संस्करण को अध्ययन के लिये चयनित किया जायेगा।

1. **अनुसंधान विधि–** अंतर्वस्तु विश्लेषण तकनीक के अन्तर्गत मात्रात्मक एवं गुणात्मक विधि को प्रयोग में लिया जायेगा।
2. **अनुसंधान की प्रकृति उपागम एवं प्रकियायें–** इस अध्ययन में मिश्रित प्रकिया का प्रयोग किया जायेगा। गुणात्मक एवं मात्रात्मक दोनो प्रकार के आकड़ों का प्रयोग किया जायेगा।

न्यादर्श और न्यादर्शन प्रविधि– इस शोध कार्य के अन्तर्गत हिंदी समाचार पत्रो के प्रयागराज संस्करण (उद्देश्यपूर्ण न्यादर्श तकनीक के अधार पर चयनित) कर किसी दो समाचार पत्रो के मुख्य पृष्ठ, स्थानीय पृष्ठ, संपादकीय पृष्ठ, अन्तर्राष्ट्रीय पृष्ठ का चयन किया जायेगा।

समय अवधि– कुम्भ 2025 की आयोजन अवधि तक के समाचार पत्रों एवं अन्य सम्बन्धित अभिलेखो व अन्य को इस शोध कार्य में सम्मिलित किया जायेगा।

आंकड़ों का स्रोत– इस अध्ययन के अंतर्गत प्राथमिक एवं द्वितीय के दोनों प्रकार के आंकड़ों का प्रयोग किया जायेगा।

1. **प्राथमिक आंकड़े–** अनुसूची/साक्षात्कार के माध्यम से प्राथमिक आकड़े इकट्ठे किये जायेंगे। इन आंकड़ों के विश्लेषण कर प्रयोग में लाये जायेंगे

कमांक	साक्षात्कार संवर्ग	संख्या
1	कुभ मेले से जुड़े प्रशासनिक अधिकारीगण	10
2	कुंभ मेला क्षेत्र में कल्पवास कर रहे कल्पवासी	10
3	कुंभ मेला क्षेत्र में आने वाले श्रद्धालु	10
4	प्रमुख मठो से सम्बन्धित धर्मगुरू एवं साधू संत	10
5	मीडियाकर्मी	10
6	सोशल मीडिया इंन्फ्ल्यूएंशर	10
7	स्वयं सेवी संस्थाएं	10
8	लोक कलाकार	10
9	स्थानीय नगारिक	10
10	कुभ मेले से जुड़े व्यवसायी	10
11	विदेशी पर्यटक	10
12	मीडिया अध्यापक एवं विघार्थी	10

2. **द्वितीयक आंकड़े–** द्वितीयक श्रोतो के अंतर्गत आंकड़ों के प्रकाशित और अप्रकाशित दोनो श्रोतों का उपयोग किया जायेगा जिसमें मुख्यतः हिंदी दैनिक समाचार पत्र प्रकाशित माध्यम से एवं सरकारी अभिलेख जैसे विभिन्न प्रयागराज मेला प्राधिकरण, प्रयागराज के अभिलेखीय प्रपत्र आदि का प्रयोग किया जायेगा।

आंकड़ों को एकत्रित करने के उपकरण– प्रकाशित समाचार पत्र, अवलोकन विधि एवं साक्षात्कार, अनुसूची के माध्यम से आंकड़ो का संग्रहण किया जायेगा।

अनुसंधान उपकरण/तकनीक– इस शोध कार्य के अन्तर्गत अंतर्वस्तु विश्लेषण तकनीक के अन्तर्गत आने वाले उपकरणों का प्रयोग किया जायेगा। समाचार पत्र से आंकड़ो का एकत्रण दो समाचार पत्रो के मुख्य पृष्ठ, स्थानीय पृष्ठ, संपादकीय पृष्ठ का चयन कर किया जायेगा। इसके साथ सारणी में वर्णित आंकड़ो के अनुसार साक्षात्कार माध्यम से आंकडे एकत्र किये जायेंगे।

विश्लेषण की इकाई– सांस्कृतिक संदेश, प्रशासनिक, प्रबंधन, तैयारियां, सूचनात्मक/दिशा–निर्देश, भीड़ प्रबंधन, जागरूकता, कार्यक्रम, परम्पराएं, दुर्घटनाएं, छायाचित्र, विज्ञापन एवं अन्य इकाईयों को प्रयोग में लिया जयेगा।

समंक संकलन प्रकिया एवं प्रयुक्त सांख्यिकी विश्लेषण प्रविधि– इस शोध कार्य में विश्लेषणात्मक तकनीक से सम्बन्धित सांख्यिकी पद्धतियों का प्रयोग आंकड़ो के विश्लेषण हेतु प्रयोग किया जायेगा।

अध्ययन की परिसीमांए/क्षेत्र – यह शोध, समाचार पत्रो में प्रकाशित खबरो, साक्षात्कार के

Sadhna

Ordhit

परिणाम, साक्ष्यपूर्ण अभिलेख एवं उसके प्रभाव तक सीमित रहेंगे जो सिर्फ प्रयागराज क्षेत्र से सम्बन्धित हैं, इसी के साथ उक्त शोध कार्य के अन्तर्गत वर्ष 2025 में प्रयागराज में आयोजित होने वाले महाकुम्भ का ही अध्ययन किया जायेगा।

6- शोध के आपेक्षित परिणाम (Expected Outcome of the Research) :

कुम्भ के आयोजन और सांस्कृतिक लोकप्रियता के मध्य संबन्धो की पड़ताल करना और विश्लेषण करके यह समझने का प्रयास करना कि बदलते समय में इतने बड़े आयोजन का सांस्कृतिक धरोहर के संचार व्यवस्था में कुंभ मेले की क्या भूमिका है।

यह शोध कार्य प्रयागराज शहर से प्रकाशित हिंदी समाचार पत्रों में कुम्भ मेले से सम्बन्धित खबरों एवं सम्बन्धित के साक्षात्कार एवं अन्य का विश्लेषात्मक अध्ययन के माध्यम से किया गया है। कुम्भ मेला भारत का सबसे बड़ा धार्मिक आयोजन है। कुंभ मेले की भव्यता और लोकप्रियता के कारण विभिन्न संचार माध्यमो द्वारा इसकी कवरेज को प्राथमिकता दी जानी चहिये।

अतः इस शोध कार्य के अन्तर्गत हिन्दी समाचार पत्रो में कुम्भ मेले से सम्बन्धित मे खबरों का गहन अध्ययन करते हुये यह जानने का प्रयत्न किया जायेगा कि इस तरह के आयोजन के सन्दर्भ में भारतीय संस्कृति को बढ़ावा देने में हिंदी समाचार पत्र की क्या भूमिका है और इसी के साथ यह जानने का प्रयत्न किय जायेगा कि उक्त सांस्कृतिक धरोहर के संचार में कुम्भ मेले का समकालीन लोकप्रिय संस्कृति के विकास में कितना सहयोगी है एवं इस योगदान की प्रभावशीलता कितनी है।

संदर्भ सूची (References) :

Astrological Significance. Kumbh Mela Official Website. www.kumbh.gov.in/en/ astrological-significance (assessed on june 05, 2024).

Paul, S. Event Management: A Study on the Ardh Kumbh Mela 2019. International Journal of Business and Management Invention (IJBMI). 2019; 8:42-47.

Buzinde, N. & Kalavar, M. & Kohli, N. & Quadri, A. & Padala, R. Emic understandings of Kumbh Mela pilgrimage experiences. Annals of Tourism Research, 2014; 49: 1-18.

Kanaujiya, A. & Tiwari, V.. Health implications of mass gatherings: Kumbh Mela in India 2025. Journal of Travel Medicine (JOTM). 2024; 31:33-35

Shukla, S. Conducting mass gathering events during the COVID-19 pandemic: a case study of Kumbh Mela 2021 as a potential 'super spreader event'. Journal of Travel Medicine. 2021; 28:1–7

Kama, M.. Making the Colonial State Work for You: The Modern Beginnings of the Ancient Kumbh Mela in Allahabad. The Journal of Asian Studies Duke University Press. 2003; 62:873-905.

Quadri, A. & Padala, R. An Aspect of Kumbh Mela Massive Gathering and COVID-19. Current Tropical Medicine Reports By United States. 2021; 8:225–230.

Kanaujiya, A. & Tiwari, V. Health implications of mass gatherings: Kumbh Mela in India 2025. Journal of Travel Medicine. 2024; 31. DOI: 10.1093/jtm/taae076

Malik, S.. Cultural Tourism: A Study of Surajkund International Crafts Fair. Turkish Onlin Journal of Qualitative Inquiry (TOJQI). 2021; 12:186-194.

Pandey, S. Fairs or Melas: Symbol of Economic Exchange And Socio - Religious Harmony (Ancient to Modern Period). International Journal of Creative Research Thoughts (IJCRT). 2024; 12:105.110.

Ruback, R. B., Pandey. J., & Kohli, N. Evaluations of a sacred place: Role and religious belief at the Magh Mela. Journal of Environmental Psychology. 2008; 28:174-184.

Nirmalendu, K. (2019). Prayagraj Aur Kumbh, Sanskratik Vaibhav ki Abhinav Gatha. Lok Bharti Prakashan

Bhardwaj, M. S. (1983). Hindu places of pilgrimage in India: A study of cultural geography. Berkeley: University of California Press.

Lochtefeld, J. (2010). God's gateway: Identity and meaning in a Hindu pilgrimage place. Oxford University Press

DrillBit

The Report is Generated by DrillBit Plagiarism Detection Software

Selected Language	Hindi

Submission Information

Author Name	mohit and Sadhana
Title	Kumbh
Paper/Submission ID	3622190
Submitted by	drsadhana@uprtou.ac.in
Submission Date	2025-05-16 15:37:19
Document type	Synopsis

Result Information

Similarity	**0%**

A Unique QR Code use to View/Download/Share Pdf File

DrillBit

DrillBit Similarity Report

0	1	A
SIMILARITY %	MATCHED SOURCES	GRADE

A-Satisfactory (0-10%)
B-Upgrade (11-40%)
C-Poor (41-60%)
D-Unacceptable (61-100%)

LOCATION	MATCHED DOMAIN	%	SOURCE TYPE
1	Thesis Submitted to Shodhganga, shodhganga.inflibnet.ac.in	<1	Publication